

हूलोंगापार गबिबन अभयारण्य

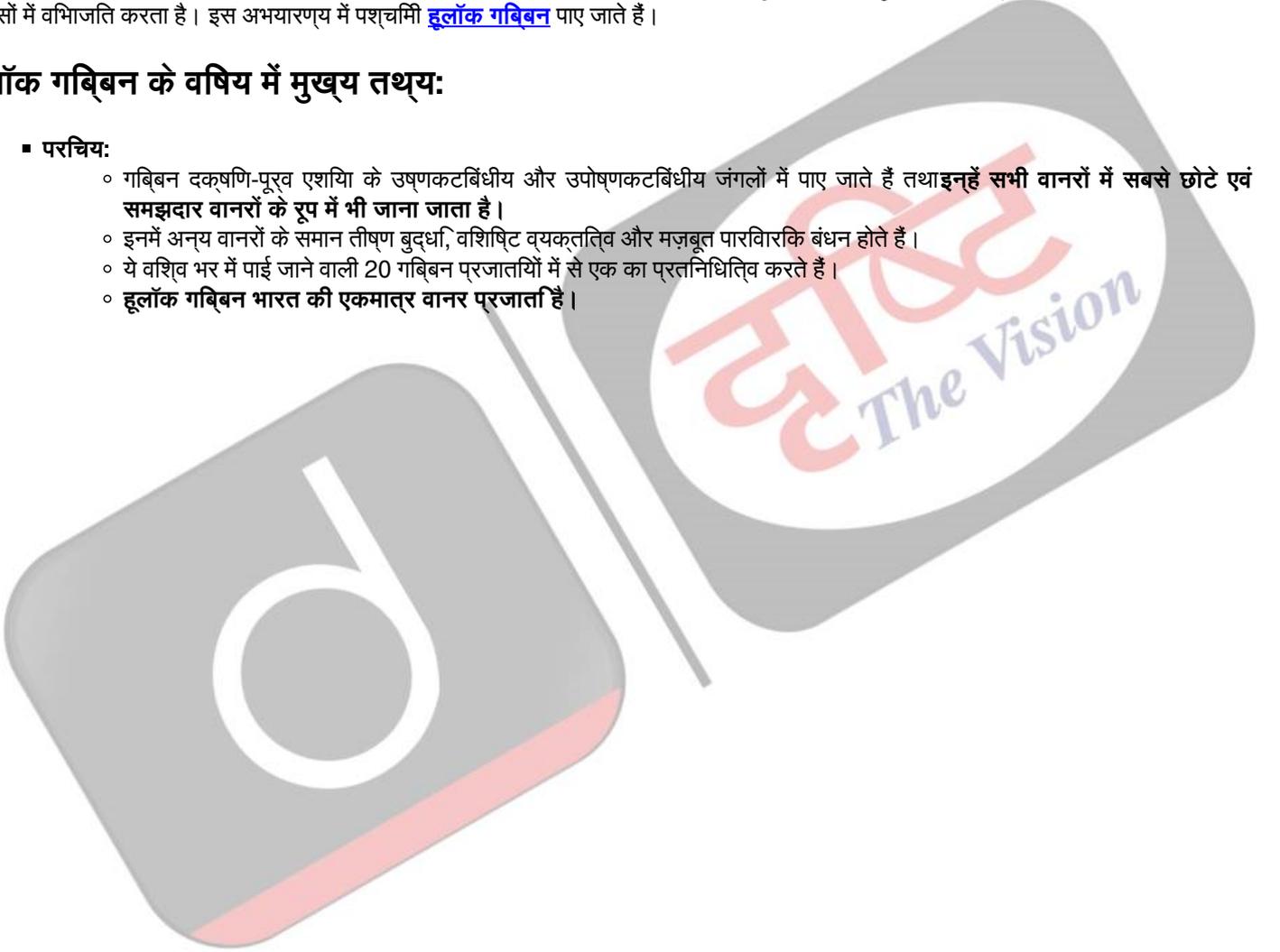
[स्रोत: द हट्टि](#)

प्राइमेटोलॉजिस्ट्स ने 1.65 किलोमीटर लंबे रेलवे ट्रैक का मार्ग बदलने का प्रस्ताव दिया है जो पूर्वी असम में **हूलोंगापार गबिबन** अभयारण्य को दो असमान हिस्सों में विभाजित करता है। इस अभयारण्य में पश्चिमी [हूलोंक गबिबन](#) पाए जाते हैं।

हूलोंक गबिबन के विषय में मुख्य तथ्य:

■ परिचय:

- गबिबन दक्षिण-पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों में पाए जाते हैं तथा **इन्हें सभी वानरों में सबसे छोटे एवं समझदार वानरों के रूप में भी जाना जाता है।**
- इनमें अन्य वानरों के समान तीक्ष्ण बुद्धि, विशिष्ट व्यक्तित्व और मज़बूत पारिवारिक बंधन होते हैं।
- ये विश्व भर में पाई जाने वाली 20 गबिबन प्रजातियों में से एक का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **हूलोंक गबिबन भारत की एकमात्र वानर प्रजाति है।**





■ भारत में गबिबन प्रजातियाँ:

○ पश्चिमी हूलाक गबिबन (*Hoolock hoolock*):

- ये पूरवोत्तर के सभी राज्यों में ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण और [द्विगं नदी](#) के पूरव क्षेत्र के बीच सीमति हैं। भारत के बाहर यह पूरवी बांग्लादेश तथा उत्तर-पश्चिम म्याँमार में पाया जाता है।

- IUCN रेड लिस्ट: संकटग्रस्त

○ पूरवी हूलाक गबिबन (*Hoolock leuconedys*):

- यह भारत में अरुणाचल प्रदेश और असम के वशिष्ट इलाकों में और भारत के बाहर दक्षिणी चीन तथा उत्तर-पूरव म्याँमार में पाया जाता है।

- IUCN लाल सूची: असुरक्षित

- भारत में दोनों प्रजातियाँ भारतीय (वन्यजीव) संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची 1 में सूचीबद्ध हैं।

■ वशिषताएँ:

- वे अपनी वशिष्ट सफेद भौंहों, लंबी भुजाओं और स्वरो के उच्चारण के लिये उपयोग की जाने वाली गले की थैली के लिये जाने जाते हैं।

■ वृक्षीय जीवनशैली:

- गबिबन वशिष रूप से वृक्षवासी होते हैं, जो उष्णकटबिधीय जंगलों में पेड़ों की चोटी पर अपना जीवन बिताते हैं।

■ चुनौतियाँ:

- हूलाक गबिबन वशिष रूप से आवास संबंधी व्यवधानों, जैसे कैंनोपी गैप (Canopy Gaps) के प्रतिसंवेदनशील होते हैं।
- आवास के वखिंडन के कारण उनका आनुवंशिक अलगाव हो सकता है और उनकी आबादी को खतरा हो सकता है।

■ संरक्षण के प्रयास:

- आर्टिफिसियल कैंनोपी ब्रिज जैसी पहल का उद्देश्य संरक्षण प्रयासों को सुनिश्चित कर उनकी आनुवंशिक वविधता को संरक्षित करना

है।

- गबिबन कैनोपी के माध्यम से यात्रा करते समय बीजों को फैलाकर वन पारस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
 - उनके आवासों के स्वास्थ्य और जैवविविधता को बनाए रखने के लिये उनका संरक्षण आवश्यक है।

गबिबन अभयारण्य:

- हूलांगपार गबिबन अभयारण्य, जसि पहले **गबिबन वन्यजीव अभयारण्य** के नाम से जाना जाता है, भारत के असम के जोरहाट ज़िले में स्थित है।
- वर्ष 1997 में स्थापित यह एक **समृद्ध जैवविविधता** है, जसिमें भारत के **एकमात्र गबिबन, पश्चिमी हूलाक** और बंगाल स्लो/धीमा लोरसि, पूर्वोत्तर भारत में रात्रचिर प्राइमेट शामिल हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. नमिनलखिति युगों पर वचिर कीजयि: (2010)

संरक्षति क्षेत्र	के लयि प्रचलति
भतिरकनकि, ओडशिा	खारे पानी के मगरमच्छ
डेज़रट नेशनल पार्क, राजस्थान	ग्रेट इंडयिन बस्टर्ड
परावकुलम, केरल	हूलाक गबिबन

उपर्युक्त युगों में से कौन-सा/से सही सुमेलति है/हैं?

1. केवल 1
2. केवल 1 और 2
3. केवल 2
4. 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

प्रश्न. नमिनलखिति में से कौन-सा वानर नहीं है? (2008)

1. गबिबन
2. गोरलिला
3. लंगूर
4. ओरंगुटान

उत्तर: C

- वानर (होमिनोइडयिा) अफरीका और दक्षिण-पूर्व एशयिा के मूल नविसी, प्राचीन/पूर्व वशि्व के टेललेस समियिन की एक प्रजाति है। इन्हें बड़े वानर तथा लघु वानर में वभिाजति कयिा गया है। ग्रेटर एप्स परिवार होमनिडि है, जसिके उपपरिवार में गोरलिला, होमनिोइड्स और चमिपांजी शामिल हैं, जबकि छोटे 'एप्स' हाइलोबेटडि परिवार से संबंधति हैं। उदाहरण हेतु, बोनोबोस, पगिमी चपिंजी, गबिबन, ओरंगुटान आदि।
- बंदर और वानर दोनों प्राइमेट हैं, जसिका अर्थ है कविे दोनों मानव वंश-वृक्ष के भाग हैं। बंदर और वानर के मध्य अंतर बताने का सबसे आसान तरीका पूँछ की उपस्थति या अनुपस्थति है। लगभग सभी बंदरों की पूँछ होती है, लेकिन वानर के पास पूँछ नहीं होती।
- उनके शरीर अन्य मायनों में भी भिन्न होते हैं - बंदर आमतौर पर छोटे और संकीर्ण छाती वाले होते हैं, जबकि वानर बड़े होते हैं तथा उनकी छाती एवं कंधे चौड़े होते हैं जो उन्हें पेड़ों पर झूलने में मदद करते हैं।
- ग्रे लंगूर अथवा भारतीय लंगूर भारतीय उपमहाद्वीप के मूल नविसी प्राचीन/पूर्व वशि्व के बंदरों का एक समूह है जो संपूर्ण जीनस सेमनोपथिकस का निर्माण करता है। ग्रे लंगूर स्थल जीवी होते हैं तथा जंगलों, खुले हल्के जंगली आवासों और भारतीय उपमहाद्वीप के शहरी क्षेत्रों में रहते हैं।
- अधिकांश प्रजातयिों नमिन से मध्यम ऊँचाई पर पाई जाती हैं, लेकिन नेपाल तथा कश्मीर में ग्रे लंगूर हिमालय में 4,000 मीटर क्षेत्र तक पाए जाते हैं।

अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

